अभ्यास : प्रश्न तथा उनके उत्तर

आइए फिर से याद करें :

प्रश्न 1. जोड़े बनाइए :

सोमनाथ	गुर्जर प्रतिहार
सेनवंश	लोगों द्वारा चयनित शासक
गोपाल	त्रिपक्षीय संघर्ष
कन्नौज	गुजरात
मध्य भारत	बिहार

उत्तर–

सोमनाथ	गुजरात
सेनवंश	बिहार
गोपाल	लोगों द्वारा चयनित शासक
कन्नौज	त्रिपक्षीय संघर्ष
मध्य भारत	गुर्जर प्रतिहार

प्रश्न 2. दक्षिण के प्रमुख राज्य कौन-कौन थे ?

उत्तर–दक्षिण के प्रमुख राज्य निम्नलिखित थे :

(i) चोल, (ii) चेर, (iii) पाण्ड्य, (iv) राष्ट्रकूट तथा (v) चालुक्य।

प्रश्न 3. उस समय के राजा कौन-कौन-सी उपाधियाँ धारण करते थे ?

उत्तर–उस समय के राजा अनेक और बड़ी-बड़ी उपाधियाँ धारण करते थे, जो उनके द्वारा विजित राजा उनकी अधीनता स्वीकार करते हुए देते थे । जैसे :

महाराजाधिराज, परमभट्टारक, परमेश्वर त्रिभुवन-चक्रवर्तिन आदि।

प्रश्न 4. बिहार और बंगाल में किन वंशों का शासन था ?

उत्तर–बिहार और बंगाल में क्रमश सेन तथा पाल वंशों का शासन था ।

प्रश्न 5. तमिल क्षेत्र में किस तरह की सिंचाई व्यवस्था का विकास हुआ ?

उत्तर–सिंचाई के लिए पानी की व्यवस्था हेतु डेल्टाई क्षेत्र में तट बनाए गए और पानी को खेतों तक पहुँचाने के लिए नहरें खोदी गईं । सिंचाई के लिये कुँओं की संख्या बढ़ाई गई । वर्षा का पानी बर्बाद न हो, इसलिए उस पानी को एकत्र करने के लिए बड़े-बड़े सरोवर बनाए गए । ये सभी काम योजनाबद्ध तरीके से किए गए । राज कर्मचारियों के साथ स्थानीय किसानों का सहयोग भी लिया गया ।

प्रश्न 6. कन्नौज शहर तीन शक्तियों के संघर्ष का केन्द्र बिन्दु क्यों बना ?

उत्तर—कन्नौज उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध नगर था, जो कभी हर्षवर्द्धन की राजधानी रह चुका था। इस नगर पर अधिकार का तात्पर्य था कि वह शासक गंगा-यमुना दोआब के उपजाऊ मैदान पर अधिकार कर लेता तो राजस्व का एक बड़ा जरिया बनता। यहाँ से तीनों में से किन्हीं दो पर बेहतर ढंग से नियंत्रण रखा जा सकता था। कन्नौज गंगा के किनारे अवस्थित था, अतः वहाँ से अधिक व्यापारिक कर वसूले जाने की आशा थी। इन्हीं कारणों से कन्नौज गुर्जर-प्रतिहार, राष्ट्रकूट और पाल ये तीनों का केन्द्र बिन्दु बन गया। ये तीनों शक्तियाँ लड़ते-लड़ते पस्त हो गईं और तीनों के राज्य समाप्त हो गए।

प्रश्न 7. महमूद गजनवी अपनी विजय अभियानों में क्यों सफल रहा ?

उत्तर—महमूद गजनवी अपनी विजय अभियानों में ही लूट अभियानों को अपनाया। उसने जब भी आक्रमण किया तो मंदिरों के साथ बड़े-बड़े नगरों को लूटा। उसने कभी भी भारत में अपने स्थायी शासन की बात नहीं सोची। इन लूट अभियानों में सदैव सफल होते रहने का एकमात्र कारण था कि यहाँ के राजाओं-शासकों में मेल नहीं था। राजपूत यद्यपि शक्तिशाली थे लेकिन उन्होंने आपस में ही लड़ते रहने को अपनी शान समझी। एक राज्य लूटता रहता तो अन्य सभी देखते रहते और अन्दर ही अन्दर प्रसन्न भी होते रहते। उनको इतनी समझ नहीं थी कि यह स्थिति कभी उन पर भी आ सकती है। और यही हुआ और इसी से महमूद गजनवी अपने अभियानों में सफल होता रहा।

प्रश्न 8. सामंतवाद का उदय किस प्रकार हुआ ?

उत्तर—7वीं से 12वीं शताब्दी के बीच भारत में सामंतवाद का उदय हुआ। उस समय की पुस्तकों तथा अन्य अभिलेखों में सामंत को अनेक नाम दिये गये हैं। जैसे : सामंत, राय, ठाकुर, राणा, रावत इत्यादि। उस समय के राजा जब किसी अन्य राजा को युद्ध में हराता था तो उसके राज्य को अपने राज्य में मिला लेता था। लेकिन लगभग 1000 ई० के आसपास युद्ध में हारे हुए राजा को उस स्थिति में उसके राज्य वापस मिल जाते थे जब वह विजयी राजा की अधीनता मान लेता था। बदले में उसे कुछ शर्तें भी माननी पड़ती थीं। पराजित राजा को यह स्वीकार करना पड़ता था कि विजयी राजा उसका स्वामी है और वह विजयी राजा के चरणों में रहने वाला दास है। पराजित राजा विजयी राजा का 'सामंत' कहलाता था। इसी प्रकार सामंतवाद का उदय हुआ।

प्रश्न 9. तत्कालीन राज्यों की प्रशासनिक व्यवस्था आज की प्रशासनिक व्यवस्था से कैसे भिन्न थी ?

उत्तर—तत्कालीन राज्यों की प्रशासनिक व्यवस्था आज की प्रशासनिक व्यवस्था से बहुत अर्थों में भिन्न थी। आज प्रजातांत्रिक व्यवस्था है जबकि उस समय राजतंत्र था। उस समय के अधिकारी राजा की मर्जी से नियुक्त होते थे जबकि आज प्रशासनिक सेवा के अधिकारी को कड़ी परीक्षा से गुजरना पड़ता है।

तत्कालीन केन्द्रीय शासन से सम्बद्ध अनेक पदाधिकारियों का उल्लेख मिलता है। विदेश विभाग के प्रधान को 'संधि-विग्रहक' कहा जाता था, जबकि आज केन्द्रीय सरकार में खासतौर में एक विदेश विभाग है, जिसकी देख-रेख प्रधान सचिव के हाथ में होता है। इसके ऊपर एक विदेश मंत्री होता है। आज के राजस्व विभाग को वित्त मंत्री के अधीन रखा गया है। इस विभाग में भी मुख्य सचिव के नीचे अधिकारियों, कर्मचारियों का एक समूह काम करता

है । 'आयकर' विभाग राजस्व विभाग का ही एक अंग है । भाण्डारिक जैसा अधिकारी आज नहीं हुआ करते ।

उस समय 'भांडारिक' इसलिए हुआ करते थे क्योंकि कर अनाज के रूप में भी वसूला जाता है । उस समय महादण्डनायक होता था जो पुलिस विभाग का प्रधान होता था । लेकिन आज दण्ड देने के लिए न्यायापालिका अलग है और पुलिस विभाग अलग है । आज पुलिस का काम दोषियों को पकड़ना मात्र है । दंड न्यायपालिकाएँ दिया करती हैं । इस प्रकार देखते हैं कि तत्कालीन राज्यों की प्रशासनिक व्यवस्था आज की प्रशासनिक व्यवस्था से कई अर्थों में भिन्न थी ।

प्रश्न 10. क्या आज भी हमारे समाज में सामंतवादी व्यवस्था के लक्षण दिखाई देते हैं ?

उत्तर–आज दिखाने के लिये तो सामंती व्यवस्था हमारे समाज में नहीं है, लेकिन मध्यकालीन सामंती व्यवस्था से भी अधिक क्रूर सामंतों-सा राजनीतिक बाहुबलियों का उदय हो गया है । ये कुछ न होकर सबकुछ है । सभी बाहुबली किसी-न-किसी राजनीतिक दल के किसी दबंग नेता से जुड़ा है । कुछ बाहुबली तो खास-खास राजनीतिक दलों के किसी-न-किसी पद पर आसीन होकर अपने ओहदे का धौंस दिखाकर जनता का भय दोहन करते हैं ।

प्रश्न 11. मध्यकाल के मंदिर अपने धन-दौलत के लिए काफी प्रसिद्ध थे । भव्यता के दृष्टिकोण से आप अपने पास के मंदिर से तुलना करें ।

उत्तर–धन-दौलत की दृष्टि से आज तिरुपति मंदिर तथा सिरडी का साईं राम मंदिर से हम कर सकते हैं । हमारे आस-पास के मंदिरों से यदि तुलना करें तो पटने का महावीर मंदिर किसी भी दृष्टि से भव्यता और धन-धान्य से किसी प्रकार कम नहीं है । आधुनिक काल में निर्मित इस मंदिर में आधुनिकता के पुट है । दान-दक्षिणा में यहाँ भी भारी चढ़ावा चढ़ता है । मंदिर अपनी आय से अनेक समाज सेवा-संस्थान चलाता है ।

प्रश्न 12. भारत के मानचित्र पर प्रतिहार, पाल और राष्ट्रकूट वंश द्वारा शासित क्षेत्रों को दिखाएँ । वर्तमान समय में भारत के किस भाग में अवस्थित है ?

उत्तर–